

24. वीरों का कैसा हो बसन्त

— सुभद्रा कुमारी चौहान

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

आ रही हिमालय से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,

प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,

सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

फूली सरसों ने दिया रंग,

मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,

वसु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,

है वीर-वेश में किन्तु कंत,

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

भर रही कोकिला इधर तान,

मारू बाजे पर उधर गान,

है रंग और रण का विधान,

मिलने आये हैं आदि-अंत,

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

गलबाँहें हों या हो कृपाण,

चल चितवन हो या धनुष बाण,

हो रस विलास या दलित त्राण,

अब यही समस्या है दुरंत,

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

कह दे अतीत! अब मौन त्याग,

लंके! तुझ में क्यों लगी आग ?

ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग जाग,

बतला अपने अनुभव अनंत,

वीरों का कैसा हो बसन्त ?